मुसलमानों का वास्तविक बहुदल

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक - मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन

करबला की हृदयविंधायक घटना का एक विशेष पहलू

साधारणतया इस्लाम की उन्नति का जो मापदण्ड समझा गया है उसके अनुसार तो इस्लाम का स्वर्ण काल विभिन्न समयों को समझा जा सकता है। बहुत सम्भव है कि उस समय को इस्लाम का स्वर्णकाल कहा जाये जब रोम और फ़ारस जैसे विशाल देशों पर इस्लाम की विजय पताका लहरी। सम्भव है वह युग समझा जाये जब संसार का ख़िराज सिमट-सिमट कर इस्लामी कोष (बैतुलमाल) में आ रहा था और राज्य की सीमा इतनी विस्तृत हो गई थी कि सामने दिखाई देने वाला बादल राजा की जिन्हा से संतुष्ट हृदय के साथ यह शब्द कहलवाता है कि जहाँ तुझे जाना हो जा और बरस, तेरी वर्षा से लाभ होगा वह मेरे ही कोष में आयेगा। संभव है वह समय मुसलमानों की जनसंख्या के आधिक्य का उच्चतम एवं अन्तिम बिन्दु समझा जाये जब संसार में इस्लाम के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म का नाम लेने वाला डरता था और यह समझता था कि मुझे जज़िया देने की आपत्ति का न समाना करना पड़े। किन्तु वास्तव में क्या यह नाम की जनसंख्या-आधिक्य सच्चे मुसलमानों की थी क्या जितनी जनसंख्या सरकारी दफ़्तरों में मुसलमनों की लिखी जाती थी वह इस्लाम के दृष्टिकोणानुसार भी इस्लाम के अनुयायियों की थी।

जहाँ तक इस्लाम की आत्मा और उसके वास्तविक भूषण (गुण) का सम्बन्ध है मैं निडरता से यह कह सकता हूँ कि इन इस्लाम की उन्नतियों में बहुत से समय वह हैं जो इसके पतन कहे जाने के योग्य हैं।

इसके विपरीत यदि इस्लाम की अत्यन्त निर्दयता एवं पतन का समय संसार से पूछा जाये तो वह अतिशीघ्र कर्बला की घटना के समय का नाम लेगा वह यह कहेगा कि इससे बढ़कर इस्लाम के पतन का कोई और समय नहीं एवं निःसन्देह इस प्रकार से यह उचित भी है कि स्वयं रसूल का पुत्र (इमाम हुसैन) इस्लाम के नाम लेने वालों के हाथ से मृत्यु को प्राप्त हुआ। किन्तु जब मैं एक दूसरे दृष्टिकोण से दृष्टि डालता हूँ तो मुझे ज्ञात होता है कि इस्लामी की वास्तविक जनसंख्या का यदि कहीं प्रदर्शन हुआ है तो वह कर्बला की घटना के समय न इस से पहले कभी और न इसके बाद। ये एक विचित्र बात मालूम होगी किन्तु थोड़े से धैर्य एवं सोच विचार के पश्चात् सभी बुद्धिमान व्यक्ति मेरे विचार से सहमत हो जायेंगे।

इस्लाम की शिक्षा अल्लाह पर विश्वास, सत्य मार्ग पर दृढ़ रहना एवं वास्तविकता के मार्ग में अडिगता एवं दृढ़ निश्चयता, मुझे इस दृष्टिकोण से इस्लाम की जनसंख्या का पता लगाना है।

मुझे सबसे पहले हज़रत मुहम्मद[स०] का समय दृष्टिगोचर होता है लोग कहते हैं कि आप ही के समय में मुसलमानों की जनसंख्या एक लाख तक पहुँच गयी थी। संभव है यह उचित भी हो क्योंकि हज़रत मुहम्मद

के साथ आपके जीवन के अन्तिम हज में हज करने वाले लगभग इतने ही थे किन्तु मुझे जिस प्रकार के इस्लाम की खोज है मैं स्पष्ट कहूँगा कि रसूल (हज़रत मुहम्मद) के समय में उसकी संख्या अत्यन्त अल्प थी। इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि हज़रत मुहम्मद के ओहद के युद्ध में साथ देने वाले उतने भी न थे जितनी दो हाथों की उंगलियाँ संभव हैं कहा जाये कि ये रसूल के प्रारंभिक युद्धों का समय था किन्तु शोक है कि हुसैन का युद्ध जो हज़रत मुहम्मद^{स०} के अन्तिम समय में हुआ है, इस समय भी इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं सात आदमियों से अधिक नहीं रहे थे। इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद स्वर्गवासी हो गये तथा आपके पश्चात् ख़लीफ़ाओं के समयों में इस्लाम के अनुयायियों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि हुई किन्तु क्या मुसलमानों की वह जनसंख्या जो ओहद और हुनैन में प्रकट हुयी थी उसमें वास्तव में वृद्धि हुयी। जाने दीजिये शियों के दृष्टिकोण को वह इस युग में वास्तविक इस्लाम को बहुत थोड़े लोगों में सीतिम समझे हुये हैं किन्तु आप उस इस्लाम के दृष्टिकोण से देखिये जो संसार में विजय-दुन्द भी बजा रहा था क्या इस्लामी आत्मा (वास्तविकता) अधिकतर मुसलमानों में उत्पन्न हुयी थी। इस्लाम के ख़लीफ़ा, समस्त इस्लामी देशों के शासक को घर में घेर लिया गया है, परदेस नहीं है, अपना ही राज्य-स्थान है, कोष एवं धनादि सभी कुछ है एवं परदेशी (विदेशी) आक्रमण कर रहे हैं किन्तु ख़लीफ़ा का साथ देने वाले इस इस्लामी जनसंख्या में से जो उसे उचित ख़लीफ़ा मानते हैं कितने आदमी हैं। विदेशी शत्रु आपने कार्य में सफ़ल होते हैं, ख़लीफ़ा की हत्या कर डालते हैं, शव को मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में तीन दिन के बाद भी नहीं गाड़ने (दफ़न होने) देते किन्तु उन मुसलमानों के रक्त में कोई प्रवाह नहीं तथा मदीने की भूमि पर कोई परिवर्तन नहीं होता। इसके पश्चात् हज़रत अली की ख़िलाफ़त के समय में विभिन्न प्रकार के उदाहरण मिलते हैं जहाँ आपके साथ वाले मुसलमान जो वास्तव में वह ही थे जो आप को चौथा ख़लीफ़ा एवं एक धार्मिक शासक के रूप में मानते थे वही बात-बात पर आपका विरोध करते थे तथा नहजुल बलाग़ा के पृष्ठ इन शिकायतों से भरे पड़े हैं जो आपकी ज़बान से इन मुसलमानों के कर्मों पर की गयी है।

मैं नहीं समझ सकता कि इसके पश्चात् कौन सा समय इतिहास प्रस्तुत कर सकता है जिसमें मुसलमानों की वास्तविक जनसंख्या का मुझे ज्ञान हो सके किन्तु मैं सच कहता हूँ कि करबला की घटना एक वह अद्वितीय उदाहरण है जिसमें इस्लाम की वास्तविक आत्मा तथा दृढ़ निश्चयी मुसलमानों की संख्या का उच्चतम बिन्दु समझा जा सकता है।

वह हुसैन के साथी थे जो प्रसिद्ध है कि 72 थे किन्तु ऐतिहासिक आधार पर 100 से कुछ अधिक थे मैं सच कहता हूँ कि यह जनसंख्या वह थी जो हज़रत मुहम्मद के समय में 7-8 से न बढ़ी तथा इसके पश्चात् भी कभी इतनी अधिक संख्या वास्तविक मुसलमानों की प्रकट नहीं हुई जितनी करबला के युद्ध में। हुसैन ने सम्पूर्ण संसार के समक्ष मुसलमानों का एक उदाहरण (नमूना) सामूहिक रूप में प्रस्तुत कर दिया जिसका उदाहरण (समकक्ष) इतिहास प्रस्तुत नहीं कर सकता। कोई भी धर्म इतनी वास्तविक जनसंख्या अपने अनुयायियों की एक ही समय में प्रस्तुत नहीं कर सकता जो इतने अधिक कष्ट पड़ने पर भी सत्य मार्ग से न हटे हों यहाँ तक कि प्राण भी दे दिये हों।

हुसैन संसार में सबसे प्रथम एवं अन्तिम बार वास्तविक मुसलमानों के सामूहिक संगठन का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे तथा इसके लिए यदि संसार आपके चुनाव की प्रशंसा न करे तो अन्याय है, बहुत से साथ थे मगर आप ने यत्नपूर्वक समूह की संख्या में ह्रास किया ताकि शुद्ध सत्य में असत्य का नाम भी न हो। वह अपने साथ वाले समूह को एक वास्तविक इस्लामी संगठन के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। यदि उन में से किसी एक मनुष्य से भी कोई त्रुटि (दोष) हो जाता तो सम्पूर्ण समूह की वह महानता शेष न रह सकती थी।

मैं सत्य कहता हूँ कि मुबाहले में रसूल को वास्तविक मनुष्य उतने ही मिले थे जितने उनके साथ थे तथा जो बिल्कुल उनके (रसूल) के थे वरना हज़रत

बक़िया......... पेज 9 पर

महदूद इख़्तेलाफ़ को मिटाना है और सियासत की हुकूमत क़ायम करना बहुत से इख़्तेलाफ़ों का पैदा करना है।

इसलिए सिर्फ़ मज़हब पर इल्ज़ाम लगाना कहाँ का इन्साफ़ है? हाँ अगर इख़्तेलाफ़ों को ख़त्म करना है तो पूरी दुनिया की या तो एक सियासी जमाअत बनायी जाए या वक़्ती तौर पर पूरी दुनिया में एक मज़हब बाक़ी रखा जाए लेकिन पूरी दुनिया में वक़्ती तौर पर एक सियासत चल जाए तो भी इख़्तेलाफ़ पैदा होंगे क्योंकि सियासत हमारी बाहरी, बल्कि ज़ाहिरी ज़िन्दगी में बन्दिश पैदा कर सकती है, लेकिन अन्दुरूनी ज़िन्दगी उसकी पकड़ से बाहर है नफ़्स की हरकतों पर सियासत बाँध नहीं बाँध सकती वह सिर्फ़ मज़हब ही है जो ज़िन्दगी के हर हिस्से में ज़िन्दगी की हर-हर साँस के साथ-साथ रहता है इसलिए मालूम हुआ कि आख़िर में वह मज़हब ही हक़ है जो सभी दूसरे मज़हबों पर छा जाए और इत्तेहाद का नुक़्ता हो सकता है। ✦✦✦

बक़िया .... मुसलमानों का वास्तविक बहुदल

मुहम्मद[स०] दूसरों को भी साथ लाते। हुसैन यदि करबला में केवल अपने प्राण दे देते तो मुसलमानों के लिये पूर्णरूपेण उचित आदर्श न हो पाता इस लिये यह कहा जा सकता था कि वह मासूम (पापहीन) थे, जो मासूम न हो वह इतनी कठिन परीक्षा नहीं दे सकता। हुसैन अपने साथ यदि केवल बनी हाशिम को लाये होते तो यह कहा जा सकता था कि वह हाशमी रक्त का प्रभाव था, वह फ़ातिमा के दूध की शक्ति थी जो केवल बनी हाशिम, या अली व फ़ातिमा की संतानों तक ही सीमित थी दूसरे के बस की यह बात नहीं है परन्तु इमाम हुसैन ने अपने साथ अपने कुटुम्बियों (सम्बन्धियों) के अतिरिक्त बहुत से साथियों एवं सहायकों (समर्थक़ों) को साथ लिया जिनके विचारों, भावनाओं एवं कार्यों में एकीकरण का कारण इस्लाम की सहायता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। वास्तव में इतने एक विचार, एक हृदय, एक वाणी, दृढ़-निश्चयी पूर्णरूपेण अडिग मुसलमान संसार के सम्मुख न करबला की घटना के पूर्व कभी आये तथा न कर्बला की घटना के पश्चात् एवं यह करबला की घटना का वह विशेष पहलू है जिसके कारण मुसलमानों को सदैव इसकी स्मृति माननी चाहिए। ✦✦✦